एक मसीहा
बाबासाहब डॉ.भीमराव अम्बेडकर

“आर्थिक विषमता ही मानव जाति की समस्या रही हैं। जिसे दूर करने के लिए गौतम बुध्द से लेकर आधुनिक युग तक बहुतो महामानवों ने सिर्फ चिन्तन ही नहीं किया बल्कि कइयों ने अपने प्राण भी गवाएँ। उसी कड़ी में जन्मजात आधार पर उपजी आर्थिक विषमता जिसका चरम प्रतिबिम्बन छाया भारत की जाति भेद को शिदृत(हृदय) से महसूस कर जन्मजात सर्वहाराओं की आर्थिक विषमता डूर करने का प्रथम वैज्ञानिक एवं गणितीय अध्ययन कर कानूनी प्रयास करने वाले असाधारण प्रतिभाशाली और महा मानवतावादी बाबा साहब भारतरत्न डा. भीमराव अम्बेडकर जो चौदहवीं की चाँद की तरह चौदह रत्नों से परे भारत रत्न के रूप में चमक रहे है और चमकते रहेंगे। ” का जन्म 14 अप्रेल 1891 को मध्यप्रदेश में स्थित इन्दौर से 20 कि. मी. दूर स्थित महु में तात्कालीन परिवेश में अछूत माने जाने वाले महार जाति की माता भीमाबाई पिता रामजी सूबेदार के चौदहवीं सन्तान के रूप में हुआ।

तात्कालीन भारत जहाँ जातियों की विहत्तर संख्या 6553 मानी गई है, में से केवल 53 जातियाँ जिसे अ, ब और स के रूप में सवर्ण मानी जाती रही है। सत्ता, शिक्षा और व्यापार पर काबिज रहीं हैं। शेष बची 6500 जातियाँ द वर्गीय मानी गई जिसे किन्हीं न किन्हीं स्तर पर अछूत या अतिअछूत की संज्ञा प्राप्त थी। सवर्ण जातियाँ की अपने दैनिक जीवन आने वाली कठिनाइयों को दूर करने अछूत अतिअछूत जातियों में बाँट–बाँट कर इनका सेवा लेते रहे। बंटन क्रम गणित रसोई , बैठक, बरामदा (परछी) आँगन और बाहर के गणित पर आधारित था। रसोई, बैठक और बरामदा तक सेवा देने वाले जो बिना नहाए अन्तः प्रवेश नहीं कर पाते थे गीले वस्त्र पहने ही अपने निर्धारित कर्तव्यों का निर्वहन करते थे अछूत एवं आँगन और बाहर सेवा देने वाले को अति अछूत माना जाता था। सवर्णों का जूठा ही नसीब होता था। जूठा का स्तर भी उनके पूर्व सेवा कक्षों से निकलने वाले जूठों का प्रकान्तर होता था। सवर्ण ऐसी व्यवस्था को कायम रखने ईश्वरवाद का सहारा लेकर कथाएँ एवं ऋचाएँ लिखी जिसमें स्वयं को ईश्वर का अवतार या अशांवतार या ईश्वर पुत्र या दूत प्रमाणित करने कोई कसर बाकी नहीं रखा। और द वर्गीय के लिए अपने द$_1$, द$_2$, द$_3$, द$_4$ द$_5$ के कर्तव्यों पर ततष्ठ रहकर सेवा ही करें, संग्रह की प्रवृत्ति सोचना ही प्रथम पाप होगा। संग्रह एवं भोगविलास हम सवर्णों के लिए ही निहित है।इस प्रकार तथाकथित अ,ब और स वर्गीय श्रेष्ठतर जाति समूहों के स्वार्थ चेतना के कारण द वर्गीय दलित और दलित्तर को पीढ़ी दर पीढ़ी आर्थिक अवसरों एवं मानवीय मर्यादा से वंचित रहना पड़ा।

बाबा साहब इस प्रकार व्यवस्थित छूआछूत की सामाजिक बुराई को गुलामी से भी बद्तर मानते थे और अछूतो को गुलामो के गुलाम। दुनिया के प्राचीनतम् साम्यवादी गौतम बुध्द से कार्ल्स मार्क्स ,रूसो , हाब्स, लाक, लिंकन ज्योतिबा फुले इत्यादि मनीषियो के अध्ययन के बाद खुद को समर्पित किया। भारत के इस द वर्गीय दलित और दलित्तर बहु संख्यक लोगों के मजे ढुढने में। उनकी यह खोज जाति का विनाश के रूप में सामने आयी। जाति व्यवस्था को पालित पोषित करने वाली ब्रम्हणवादी के रूप में रचित मनुस्मृति की होली जलायी।उन्होंने अध्ययन किया कि मुस्लिम शासन काल में द वर्गीय जातियाँ मुस्लिम धर्म स्वीकार कर एवं अंग्रेजी शासन काल में ईसाई धर्म स्वीकार कर अ, ब, स वर्गीय सवर्णों के बराबर या उनसे भी बड़े माने जाने लगे। तब उन्होंने कहा हम तभी तक अछूत है जब तक हिन्दू धर्मी हैं। हिन्दू रहकर नीचता का कलंक नहीं मिटेगा, हिन्दू धर्म में मुक्ति नहीं सारे भेदभाव हिन्दू धर्म की उपज है। दलित हिन्दुओं से भिन्न है, अछूत हिन्दू नहीं हैं।हमको हिन्दू कहिए न हमसे कहलाइए। इसी संदर्भ में डॉ. अम्बेडकर ने 13 अक्टूबर1935 को येवला कान्फ्रेन्स में अपने भाषण में कहा – हमने हिन्दू समाज में समानता का दर्जा हासिल करने के लिए हर तरह की कोशिशे की और सत्याग्रह किए। परन्तु सब बेकार। हिन्दू समाज में समानता के लिए कोई स्थान नही है। हिन्दू धर्म त्याग कर ही हमारी परिस्थितियों में सुधार होगा। अछूतों के लिए धर्म परिवर्तन के अलावा कोई दूसरा रास्ता नही है। धर्म परिवर्तन से ही अछूतों का कल्याण होगा। बाबा साहब का सुविचारित मन या सच्चा धर्म वह है,जो व्यक्ति के विकास में सहायक हो। इसके लिए भातृभाव , समानता और स्वतन्त्रता को आवश्यक मानते थे। हिन्दू धर्म में न केवल इन बातों का अभाव है ,अपितु धर्म इसके विपरीत पक्षपात पूर्ण व्यवहार का पाठ पढ़ाता है। अछूतो को अशिक्षित बनाये रख के स्वतन्त्र विकास के अधिकारों का हनन करता है। उन्हें धन अस्त्र शस्त्र रखने की छूट प्रदान नहीं करता है। इसीलिए आध्यात्मिक आधार पर अछूतों के लिए हिन्दू धर्म के पक्षधर नहीं थे। और स्वयं के लिए ऐलान किया ” यद्यपि मै हिन्दू जन्मा हूँ मैं हिन्दू मरूंगा नही ” उन्होंने देखा कि हिन्दू धर्म में अछूत के रूप में पैदा हुए मनुष्य के लिए मानव की तरह सुशीलता और शान से जीवन व्यतीत करना असम्भव है। समूची दलित जाति समूची आबादी का 85 प्रतिशत और सवर्णों की आधी आबादी (सम्पूर्ण सवर्ण नारी जाति) भारत के आबादी का 7..5 प्रतिशत मिलाकर सम्पूर्ण भारत के आबादी का 92.5 प्रतिशत आबादी का आर्थिक विषमता दूर करने और सामाजिक समरसता बनाये रखने सतत् आजीवन संघर्षरत रहे। इसके लिए तत्कालीन हिन्दू नेताओं का विरोध सहते रहे। आश्चर्य! आगे चलकर यही विरोधी नेता गण भी समर्थन में प्रथमोत्तर पंक्ति के नेता बनने लबडेना कोई मारे गिरत आमा मोरेच आय की तर्ज पर आगे आने लगे। परिणाम आश्चर्यजनक रहे जिन मानव वेत्तरों के लिए विगत 3500 वर्षों में कल्पना करना दुष्कर था, झुण्ड के झुण्ड एम. एल. ए. , एम. पी. , डाक्टर , इंजीयर , प्रोफेसर , आई. ए. एस. – – – – आदि आदि पदों पर अलंकृत होकर राष्ट्र की मुख्य धारा में जुड़ने लगे। इस प्रकार बाबा साहब अपने गुरूओं द्वारा इजाद हथियार का सर्वाधिक बल प्रयोग जन्मजात आधार

पर विश्व इतिहास में सर्वाधिक आर्थिक विषमता के आधार पर बने गुलामों के गुलाम अछूत द वर्गीय आदिवासियों की बेहतरी के लिए किया। अनन्तः बौद्ध धर्म स्वीकार कर 6 दिसम्बर 1956 को महापरायण को प्राप्त हुए।

बाबा साहब के महापरायण को प्राप्त होने उपरांत विश्व के कई देशों ने जन्मजात निर्योग्यता के आधार पर आर्थिक विषमता के आधार बने लोगों की मुक्ति के लिए आम्बेडकरी आरक्षण गणितीय का प्रयोग देश काल परिस्थिति के अनुसार कई नामों से करने लगे हैं।जाके पाँव न फटी बेवाई , सो क्या जाने पीर पराई। आप (बाबा साहब) जैसे चिन्तक आज भी छटपटा रहे हैं और जरूरी भी है। राजा बलि और कर्ण की दानवीरता , एकलव्य की गुरूभक्ति के नाम त्याग की कथा याद करा करा कर पुनः कराहती हुई दुनिया के सौदागर बने हैं की सौदागरी बंद कराने आप हम सबको आपस में मिलकर चिन्तन मनन करना होगा तभी इस देश में डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर के सपनो को आज नही तो कल साकार किया जा सकता है।लेकिन राह सरल हो तो उसमें राही भी ज्यादा होते है, और इस राह में मीठे आम भी हो तो आम प्राप्त करने लबडेना मारने वालो की कमी नहीं है। आज "टका दि धर्मा टका ही कर्मा टका दि सर्वेसर्वा। अस्य पार्ष्वे टका नास्ति सदा टके टकाटकाति ।।" अर्थात रूपिया ही धर्म है, रूपिया ही कर्म है। सब ओर रूपये पर हीटकटकी लगी है। आरक्षित वर्ग शिक्षा के बढ़ते पायदान में कुछ–कुछ अधिकारिक भाव से सम्पन्न प्रतीत हो पा रहे हैं ,लेकिन अपनी पूर्व दब्बू मानसिकता के कारण सेवाव्रती होने के भाव को अपना श्रृंगारित कर्तव्य मान बैठे हैं । अधिकारिक भाव से सम्पन्न प्रतीत नहीं हो पा रहे हैं। जिसका अनारक्षित वर्ग के प्रबुद्ध, बलवान एवं चालाक जन भरपूर लाभ ले रहे हैं। मीठे – मीठे बोल में मतलबी फूल भाई (गंगाजल, महाप्रसाद, तुलसीदल दौना, जवारा सहिनाव सखी–सखा) का रिश्ता कायम करने लगे हैं। उदाहरणार्थ ऐसे बहुत से गिनाए जा सकते हैं जिन्होने ऐसे छलकर आरक्षित कोटे का लाभ लेकर अनारक्षित वर्ग के लोग मालिक बने बैठे हैं। विडम्बना है कि ऐसे छले गए आरक्षित–वर्ग के लोग ही उनके नौकर बने अपना कर्तव्य निभा रहे हैं। और न पड़े तो नकली जाति प्रमाण पत्र पर आरक्षित कोटे की नौकरियों, पंचायतो निगमों, विधानसभा, विधान परिषद, राज्यसभा और लोकसभा में अपनी पैठ बनाए रखे हुए हैं।विकास क्रम में आई जागरूकता के परिणाम स्वरूप ऐसे बहुत प्रकरणों का खुलासा भी हो रहा है।

आरक्षण बिल को मजबूरी से स्वीकारा गया बिल मानने वालों की कमी नही है, ये लोग असमानता दूर करने के पक्षघर है ही नहीं। किसी प्रकार से गरीबी और गुलामी बनाये रखने गुलामी कराने वाले लोग यह कदापि नहीं चाहते कि धर्मान्धता दूर हो। जब तक धर्मान्धता बनी रहेगी आर्थिक विषमता बनी रहेगी। क्योकि कन्याकुमारी में बैठा व्यक्ति कश्मीर वालों के लिए एवं बंगाल में बैठा व्यक्ति गुजरात वालों के लिए आपके हमारे पाकेट से धन निकालता है। गाय का दोहन कराता है और आपको स्वर्गारोहण कराने हेतू गाय के नाम पर धन लेता है। तो सर्वहारा कैसे सम्पन्न होगा। कहानी मुश्किल है।

आबादी के सातवें दशक उपरांत ही आम्बेडकरी आरक्षण का गणित काटने निजि कम्पनी चाहे देशी हो या विदेशी भारत के शहर –शहर गाँव– गाँव फैल रही है। ये निजि कम्पनियाँ आरक्षण नियमों के परिपालन से मुक्त है। इन निजि कम्पनियों के नाम पर अ,ब, एवं स वर्गीय फायनेंशर उत्पादक वितरक एवं प्रचारक बन बैठे है और हम सब द वर्गीय केवल नौकर और उपभोक्ता । इस प्रकार पुनः ऐसी व्यवस्था निर्मित की जा रही है जिससे आम्बेडकरी आरक्षण व्यवस्था शून्य की ओर अग्रसर हो जाएँ। परिणाम निजिकरण के नाम पर आर्थिक विषमता पुनः जन्मजात स्वमेव सिद्ध होगा। हमें सावधान हो जाना चाहिए। निजिकरण का निजि सिद्धांत मालिकाना हक वोटा न नोटा केवल डोटा और डोटा जैसा कि राजा का बेटा राजा।

इस प्रकार और व्यापक चर्चा करना चाहेंगे तो शब्दांत सम्भव होता प्रतीत नहीं हो पा रहा है। अंत में यही कहना चाहूंगा कि बाबा साहब दलित एवं पिछड़ो की तरक्की का रास्ता खोल दिया है। यह बात दूसरी है कि आज द वर्गिक जन दलित हो या आदिवासी या पिछड़ा वर्ग कोई भी बाबा साहब के बताए रास्ते पर चलने चिन्तन मनन से कतराता है,तथा अधिकार और लाभ प्राप्त करने अ, ब, स वर्गीक धर्म के शरण में अपनी मुक्ति ढुन्ढते – ढुन्ढते आने वाली पीढियों के संधर्ष का मार्ग कुन्द ही कुन्द करते जा रहे हैं।

ऊँ श्री हरि, अल्लाह, बिठ्ठल–बिठ्ठल साहेब कृष्ण साईराम । प्रभुयीशु बुद्धम् महावीराय, झूलेलाल वाह–ेगुरू सतनाम।।

।। एक जाति मानव जाति, एक धर्म मानव धर्म एक सेवा मानव सेवा।।

,जय भीम– जय सेवा

जय भीम– जय सेवा जय भीम– जय सेवा जय भीम– जय सेवा जय भीम– जय सेवा जय भीम– जय सेवा जय भीम– जय सेवा जय भीम– जय सेवा जय भीम– जय सेवा जय भीम– जय सेवा जय भीम– जय सेवा जय भीम– जय सेवा जय भीम– जय सेवा जय भीम– जय सेवा जय भीम– जय सेवा जय भीम– जय सेवा जय भीम– जय सेवा जय भीम– जय सेवा जय भीम– जय सेवा जय भीम– जय सेवा जय भीम– जय सेवा

पंचराम केशरिया
चाँदनी चौक वार्उ क्र. 7 अर्जुन्दा जिला–बालोद (छ. ग.)
मोबाइल 96852 67495